"मन का भ्रम"

• जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठ भाउ दूजा जाण । हरि अबिनासी सदा थिर निहचल तिस मेरे मन भज परवाण ।1।

अर्थः- हे मन ! जगत में जितने भी शाह - पातशाह अमीर सरदार चौधरी दिखाई देते हैं ये सारे नाशवंत हैं । ऐसे माया के प्यार को झूठा समझ । सिर्फ परमात्मा ही नाश - रहित है । सदा कायम रहने वाला है, अटल है । हे मेरे मन ! उस परमात्मा का नाम जपा कर तभी कबूल होगा ।

मेरे मन नाम हरी भज सदा दीबाण । जो हरि महल पावै गुर बचनी तिस जेवड अवर नाही किसै दा ताण ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! सदा प्रभू का नाम सिमरा कर यही अटल आसरा है । जो मनुष्य गुरू के बचनों पर चल कर प्रभू के चरणों में निवास हासिल कर लेता है । उस मनुष्य के आत्मिक बल जितना और किसी का बल नहीं ।

जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनस जाहि जिउ रंग कसुंभ कचाण । हरि सत निरंजन सदा सेव मन मेरे जित हरि दरगह पावहि तू माण ।2।

अर्थः- हे मेरे मन ! दुनिया में जितने भी धनवान, ऊँची कुल वाले जमीनों के मालिक दिखाई दे रहे हैं । ये सारे नाश हो जाएंगे इनका बड़प्पन वैसे ही कच्चा है जैसे कुसंभ का रंग कच्चा है । हे मेरे मन ! उस परमात्मा को सदा सिमर जो सदा कायम रहने वाला है । जो माया के प्रभाव से परे है और जिसके माध्यम से तू प्रभू की हजूरी में आदर हासिल करेगा ।

ब्राहमण खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधान । जिउ चंदन निकटि वसै हिरड बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाण ।3। (4-861)

अर्थः- हे मन ! हमारे देश में ब्राहमण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र ये चार प्रसिद्ध वर्ण हैं । ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास ये चार आश्रम प्रसिद्ध हैं । इनमें से जो भी मनुष्य नाम सिमरता है वही सबसे श्रेष्ठ है जाति आदि के कारण नहीं । जैसे चंदन के नजदीक बेचारा अरिण्ड बसता है और सुगंधित हो जाता है वैसे ही साध - संगत में मिल के विकारी भी पवित्र हो के कबूल हो जाता है ।

• निरति करे बहु वाजे वजाए । इहु मन अंधा बोला है किस आखि सुणाए । अंतरि लोभ भरम अनल वाउ ।

अर्थः- वह अगर भगती के नाम पर नाचता है और कई साज भी बजाता है तो भी वह किसी को भी कह के नहीं सुना रहा क्योंकि वह खुद ही नहीं सुन रहा, मनुष्य का ये अपना मन माया के मोह में अंधा - बहरा हुआ पड़ा है, उसके अपने अंदर तृष्णा की आग जल रही है । भटकना की आंधी चल रही है ।

दीवा बलै न सोझी पाई । गुरमुखि भगति घटि चानण होई । आप पछाणि मिलै प्रभु सोई ।1।रहाउ।

अर्थः- ऐसी अवस्था में उसके अंदर ज्ञान का दीपक नहीं जल सकता । वह सही जीवन की समझ नहीं हासिल कर सकता इस भक्ति से मनुष्य अपने आत्मिक जीवन को परखता रहता है और मनुष्य को वह प्रभू मिल जाता है । हे भाई ! गुरू के सन्मुख रह के की हुई भक्ति की बरकत से हृदय में आत्मिक ज्ञान का प्रकाश हो जाता है ।

गुरमुखि निरत हरि लागै भाउ । पूरे ताल विचहु आप गवाई । मेरा प्रभु साचा आपे जाण । गुर कै सबदि अंतरि ब्रहम पछाण ।2।

अर्थः- गुरू के सन्मुख रहना ही नृत्य है इस तरह परमात्मा से प्यार बनता है इस तरह मनुष्य अपने अंदर से अहंकार दूर करता है यही है ताल में नाचना । जो मनुष्य ये नाच नाचता है सदा स्थिर प्रभू स्वयं ही उसका मित्र बन जाता है । गुरू के शबद से उसके अंदर बसता प्रभू उसकी जान पहचान वाला बन जाता है ।

गुरमुखि भगति अंतर प्रीत पिआर । गुर का सबद सहज वीचार । गुरमुखि भगत जुगत सच सोई । पाखंड भगति निरत दुख होई ।3।

अर्थः- गुरू के सन्मुख रहके की गई भक्ति से मनुष्य के अंदर प्रीति पैदा होती है प्यार पैदा होता है । गुरू का शबद मनुष्य को आत्मिक अडोलता में ले जाता है प्रभू के गुणों का विचार बख्शता है । गुरू के सन्मुख रहके की हुई भक्ति ही सही तरीका है जिससे वह परमात्मा मिलता है । दिखावे की भक्ति के नाच से तो दुख होता है ।

एहा भगत जन जीवत मरै । गुरपरसादी भवजल तरै । गुर कै बचनि भगति थाई पाई । हरि जीउ आपि वसै मनि आई ।4।

अर्थः- असल भक्ति यही है कि जिसकी बरकत से मनुष्य दुनिया की किरत - कार करता हुआ ही माया के मोह से अछोह हो जाता है । और गुरू की कृपा से संसार - समुंद्र के विकारों की लहरों से पार लांघ जाता है । गुरू के उपदेश अनुसार की हुई भगती प्रभू के दर पर परवान होती है । प्रभू स्वयं ही मनुष्य के मन में आ बसता है ।

हरि किृपा करे सतिगुर मिलाए । निहचल भगति हरि सिउ चित लाए । भगति रते तिन्ह सची सोई । नानक नामि रते सुख होई ।5।12।51। (3-364-365)

अर्थः- पर जीव के भी क्या वश । जिस मनुष्य पर परमात्मा मेहर करता है उसे गुरू मिलाता है गुरू की सहायता से वह ना डोलने वाली भक्ति करता है और परमात्मा से अपना चित्त जोड़े रखता है । हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा की भक्ति के रंग में रंगे जाते हैं उन्हें सदा कायम रहने वाली

शोभा मिलती है । परमात्मा के नाम - रंग में रंगे हुओं को आत्मिक आनंद मिलता है ।

- ओह सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवान । जन नानक तिस के चरन पखालै जो हरि जन नीच जाति सेवकाण ।4। (4-861)

अर्थः- हे मन ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा आ बसता है । वह मनुष्य और सब मनुष्यों से ऊँचा हो जाता है, स्वच्छ हो जाता है । हे भाई ! दास नानक उस मनुष्य के चरण धोता है जो प्रभू का सेवक है प्रभू का भक्त है । चाहे वह जाति के आधार पर नीच ही गिना जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"